

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

— हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

११४९ (१४९)

ग्रंथ नाम

विश्वप्रकरणे.

विषय

मराठी काव्य.



Joint project of the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai, and the Yashwantrao Chavan Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

कलिप्रुथेच्या घनशामलागे ॥ यामेहुना मा  
 जी म्हणे मलागे ॥ इच्छामनी हे मज वाठते हो ॥  
 विप्रासवें पाहिन वाठते हो ॥ १ ॥ त्वां यो जो जे  
 मेहुन मा चराचे ॥ जे मार्ग हे होत चराचराचे  
 वाळा नियां वाळ आसे हरी तो ॥ जो नाम  
 मात्रे च ज वाहरितो ॥ २ ॥ कालिवदे या कमळा  
 पतिते ॥ यो डुक ॥ नराह  
 वरेतु झीया पहा ॥ से सर्व हि आपदा  
 ते ॥ ३ ॥ ह सत वद ॥ आणखी या हरी  
 ते ॥ धरी लंक ॥ रुक्मीनी घाग  
 रीते ॥ पद लळ महुते ॥ से स्व द हिरम्य पा  
 णी ॥ सज लळ घठ धरा या या ग्य नाच  
 क्री पाणी ॥ ४ ॥ सुपुष्पापरी रंगले मधठाचे  
 कसे आरवा हिल ते या घठाचे ॥ हि से क  
 दळी कापरा साम्य दे हि ॥ आसी काये

(2)

आलुत्यहिसमजलाजगहंत रात्मा ॥  
बोले शतक्रतुसुताप्रतितुं माहात्मा ॥ को  
धाकसि इतु कीयातचीयावधा ॥ पोहेक  
सीरचीतसेनीजयोगमाया ॥ ३८ ॥ उले तु  
झयास्वजनीहिसावे ॥ तुझ्यारथीम्यांम  
गकोवसावे ॥ मनीआसंकार्यतुसंज्ञावे  
उगेचवाठेमजलं ॥ ३९ ॥ साधाव  
याफाळुनेका ॥ आसासमातं  
उनीकामनळा ॥ जालाधुलरादृजा  
ळा ॥ कीआजडा ॥ नेरजाळा ॥ ४० ॥  
समीपआलेनपळेकिसारे ॥ पाहुंमरेआ  
जुनतोकसारे ॥ कोहीनराचीकरीतिसवठा  
की ॥ तपिठतिहोसुनीमुखठाकी ॥ ४१ ॥  
ककालेंधर्मासीआतिचकीतहोउनीहुरि  
चा ॥ करीधावातुतोसदयकरुणाधील  
हरीचा ॥ तुझ्यालेजेहल्लाविजगनजीभा  
नुउजळतो ॥ कसाअशासंधीपउनीस



मरिपार्थजकलो ॥ ४२ ॥ रेवाचोनी सागेव  
 सनाचकाते ॥ स्थीराउनिया मनचंचकाते  
 पुनः पुनः श्री हरि मूर्ति पाहे ॥ किउध्यरी  
 दासतुशीलपाहे ॥ ४३ ॥ परबहिपाउनि  
 सुध्यरितिंध्यानितुशी मूर्ति जरि घरीती ॥  
 क्रोधाकतिसंगतरियमाया ॥ तुशीआसी  
 हेआतयेवमाया ॥ ४४ ॥ नउअलोचंदन  
 जविआला ॥ ध्यानीआशाआठवितोआ  
 आला ॥ वाचोह ॥ ४५ ॥ पार्थातोर  
 तसाविष्णुने ॥ नदित्वरे ॥ बोलेआ  
 बीहाजयदुपाहु ॥ नसेआस्तरे ॥ हे  
 जललाविलेंदुरि ॥ सातोपरिवोधीतासुकरियासंधवाचाग  
 का ॥ केलातोउनिअर्धचंद्रविशीखेसामस्त  
 कावेगका ॥ ४६ ॥ दुर्योधनाहिकसलज्जस  
 शोकजाळे ॥ त्याचेप्रमोदजरदिपकतेविशाले  
 केलाजईविजयदुर्जयवासुदेवे ॥ हेवाकीजे  
 हरिकथानककीसदेवे ॥ ४७ ॥

(५)

रहि आसे हास आने करिती ॥ जे काबा  
से श्रीस्तवने करिती ॥ बाधे लया काळ कसा  
आहोता मज नन्य जो श्रीहरी हास होतो ॥ १८ ॥  
जया ते या लोकी सत नै दुखि चे अवेसे ॥ तया सां  
भोना या बाती नीक ठ उचें सरवेसे ॥ बारि का  
ची जा रि नीरी प्रगठ हा विल दिसतो ॥ स्वतं  
तु आता हा मग जगति को की सतो ॥ १९ ॥  
ताता भीध ननु माय लक्ष्मी ॥  
जे सर्व हास गुण लक्ष्मी ॥ शांति  
व्यगत्र कुक देवें गज्जा ॥ हासानुहा  
सहरी व्यास कळादि जाचा ॥ २० ॥  
इति श्री महाभारते जय द्रथ वध समाप्त ॥



स्वयं ३३ सर्वज्ञ हि रुध्रवाते ॥ पुसेनी त  
वेदोनी यां माधवाते ॥ तया च्यावदंत्यात्वी  
दिव्या कथाया ॥ श्रूकव्यास युक्तिवेदोनी य  
थाया ॥ १ ॥ सुधर्मा स ज्ञेयो वतिरुच्छिन्नचक्र  
हरी मध्यमार्गी कर्त्री स्वचक्र ॥ घनः शाम  
हमांबरी सा समान ॥ २ ॥ कोटिकंदर्पकोमा  
समान ॥ ३ ॥ पुदे ॥ योगनृसंगनाचे  
जयाचे यथा सा ॥ ४ ॥ गानाचे ॥ सजेवे  
मल्लते समिपटि ॥ ५ ॥ येन धार्मिकानी  
नीरापित जाती ॥ ६ ॥ सकवचतनुसा  
रमल्लकीठा पजारी ॥ ७ ॥ यदुमधुवरडे सया  
मधकेठ पारी ॥ ८ ॥ करी सशरधनुष्यपाहि  
सी पुणजाते ॥ ९ ॥ हरिमनी नयनी हीय  
रितीची सजाते ॥ १० ॥ लोदुतये येकवी



तसें जो करि प्रसन्न भवति तस्य पाते ॥ ३३ ॥  
 वर्षति सुरन श्री सुमनाते ॥ रेखी तीहरी  
 गुणासी मनाते ॥ घोष वाद्य बहं वाजती  
 नाना ॥ गात नारद गुणा सत नाना ॥ ३४ ॥  
 समाधान जाळे प्रवाची प्रवाते ॥ हरे व्या  
 पीले मोह नीवे ॥ स्मरे मोहनी  
 स्वप्न आपंग ॥ अना नना सं  
 गना तो गपाते ॥ बहं वाठ उताते ॥  
 देवी हराते ॥ वरे ॥ उया हरिका हरते ॥  
 आसं को तुकें ॥ हनुनी हांकी ॥ चरी वे  
 तया चीच वाचे वहावि ॥ ३५ ॥ न बाधे कधी  
 मानसी मोहनीचा ॥ नीज ध्यास या श्री  
 हरी मोहनीचा ॥ आसं वामने दिव्य आ  
 रव्यान ठोकी ॥ रचोनी सहा शंकराते वी  
 ठोकी ॥ ३६ ॥ दती सीव वीळा मृतेम  
 स्मा सुर चारी वसे पुण मस्तु

(7)

॥ कि हुन ज सी गळ ति मुक्ता फळे सिंह च पेढे ॥ ३४ ॥  
॥ ला उत काम ज हात स र पर ते हरि हो कर पछे व ॥  
॥ सो जा ॥ दुष्ट पणा सकि न छ पणा स तु ह्या सन से ॥  
॥ भुवन नई जो डा ॥ दु ति ह्यणे अ यिका य करु डा ॥  
॥ लि होय पा हाट हो झिं ज ने तो डा ॥ जा यि ल का य ई ॥  
॥ चै तु म चे मा ह्या रां डे व्या पाई प डेल तो खो डा ॥ ३५ ॥  
॥ पंच चारा ह वं चं चुरित क सी के च न मं च की चं च ॥  
॥ ति हो घे ॥ कै लि कु त ॥ लं पर स्प रे मे छ ली ॥  
॥ जे वि न दिन द घे ॥ त न स्व क्ष ते सुं द री ॥  
॥ जे हरि दे त अ ले ॥ का य न वो ढ प ले प ॥  
॥ ल ते ज रि ते ध र लि ॥ गि नी ना गे ॥ ३६ ॥  
॥ ज्यु ति च रा य के ॥ ल ल ना व र ला ल ॥  
॥ भ यि य क ठी री ॥ ये क कि रा म म नो ह र सु र त य ॥  
॥ क की सु र त सुं द र गौ री ॥ कुं द न मो म नि नी ल ॥  
॥ म नि सि ब नि ज य रा म कि स्वामि की जो री ॥ जा ॥  
॥ नो म धु ब्र त य ब्र त ठी री के चं ब त चं प क फु वं ॥  
॥ प को री ॥ ३७ ॥ स ह जे ग लि का प ठ वि त श्रु का नि जा ॥  
॥ मो क्ष ॥ क सि वे स वि ली ॥ मु नि रा प शि का ॥  
॥ च र ण स ॥ नि ज रू प क के क सि मे छ वि ली ॥  
॥ शि भ री ॥ ज रा यु क पि प ती ते कि ति य ॥

॥ देह बुद्धि बुद्ध काळा चिज नाट ॥ नवी आहे वाट  
 ॥ सार्थकाचि ॥ १ ॥ सार्थकाचि वाट भ्रांति ने लो पडा  
 ॥ जे वळि चुकलि असो निया ॥ २ ॥ असो निया दे  
 ॥ वन वळि चुकला ॥ प्राणी भांवा वला माया जाच  
 ॥ ३ ॥ माया जाळ दश्य तुट एक सरे ॥ जरि मनि धरे  
 ॥ सस्वरूपे ॥ ४ ॥ स्वरूपि निश्चये समाधान होय ॥ राम  
 ॥ दासि सोय स्वरूपाचि ॥ ५ ॥ ॥ योगियाचो देव मज  
 ॥ सा पडला ॥ थोरला भजा ला एका एकी ॥ १ ॥ एका  
 ॥ यकीय कत्रे लोका नायक ॥ देखता समुख चुक  
 ॥ ६ ॥ ॥ २ ॥ चुक कडे देव ॥ मा पुनि अंतर समा  
 ॥ गमे ॥ ३ ॥ समा गम ॥ जोडला ॥ विये ॥  
 ॥ ग हा जाळ दिवो ॥ दश धड के ला विवे  
 ॥ के वियोगा ॥ राम दा ॥ ॥ ५ ॥  
 ॥ जेथे जावे तेथे मिचीय ॥ ॥ ६ ॥ मा का सया मिश्व  
 ॥ तिकरु ॥ १ ॥ खंति क ॥ समा गमतो दि ॥ पा ॥  
 ॥ हाता सुखाचि घुडी हाय ॥ २ ॥ होय देव खरा भुमंड ॥  
 ॥ क वासि ॥ जाता दिगांता सिसारिखाचि ॥ ३ ॥ सा ॥  
 ॥ रिखाचि जनिवनि वनांतरि ॥ तो गिरिकंदरि सा  
 ॥ रिखाचि ॥ ४ ॥ सरिखाचि कडा कपाटि पाहता ॥  
 ॥ राम अठ विताराम दासि ॥ ५ ॥ ॥ आमुचे सज्जन सं ॥  
 ॥ साधु जन ॥ होय समाधान तयाचे नि ॥ १ ॥ तथाचे ॥  
 ॥ संगे पाविजे विश्रांति ॥ साधु आदि अंतिसारिखा ॥  
 ॥ २ ॥ सा रिखाचि सदा संत समाधानी ॥ प्रलो नि  
 ॥ ३ ॥ आबति सदा संत जीव लंग ॥  
 ॥ ४ ॥ रूप संग सज्जन नाचा ॥ ५ ॥ जजनाचा संग पापा  
 ॥ ६ ॥ तारा ॥ सरो ॥ निगाधुरि राम दास ॥ १ ॥

जयस्थवध

(९)

मद्रो कवी वसेर चीले पणते ॥ कुंति सुते  
मजल्या वरी अपणते ॥ हे वाक्य सत्य करवी  
वपुर्व जाचे ॥ श्री लक्ष्म नाम मजना सजा पुर्व  
जाचे ॥ १ ॥ मिमारिन जयद्रा सी समरी जो भान  
आहे नभी ॥ नाहि हो मिते ह हा दुत व हि स  
वत्मना मी न मी ॥ अजे चर्जुन वाक्य ऐकु नि  
परिकेला चीताने ॥ सी व के घडे मग उ  
से जो साध मने म ॥ ननु निकोर व  
राव सेना ॥ अलिक ॥ नो मं उ व जं इ हि से  
न ॥ तो पार्थ सैन्य ॥ बीरी व र ना ला ॥ ज्या  
इं रु हि परि न से क्ष म वा र ना ला ॥ ३ ॥ व का वा ने  
जे आ व घी न भाले ॥ स ते ज ज्या च्या करि वा  
न जा के ॥ ये ति व व के धु डित रा वृ ग या ॥ दि री  
पुटे का ण श के उ ग या ॥ ४ ॥ सु रा स ज्या पृ थ्वी  
प ति न वा जी ॥ ते ठे विले शो मं ति नु नी न वा जी  
चि वा आ स रं ग सु रं ग ज्या चे ॥ सं सार शुं ग



रीतहोगंज्याचे ॥३॥ इकडेकुरुद्विंसकळा  
 ला ॥ जावयेकचिमनासकळाळा ॥ धाकरें  
 वजया ॥ जयाने ॥ वेसलोसहुजकीं सजया ॥  
 पुढादिदुलयातप्रसरचीलेराहेतदन्यतरि ॥  
 आसंधवतो जयदथतरिचिंताकरि ॥ तारि ॥  
 विदुच्यावदनित्तमोतसमसा आचार्यराहे  
 बळे ॥ जेजेज्यास्थि ॥ नृपवरतेराहाति  
 सुबळे ॥ ७ ॥ काउ ॥ नजराजम ॥ तय  
 कसंधरीतीनजर ॥ आजपउळाउम  
 याचा ॥ वासथोर ॥ मयाचा ॥ ८ ॥  
 जनेविदशरुंदधराहे ॥ ९ ॥ एतेन्यजातिसाव  
 धराहे ॥ मुख्यआपणगुरुचउनासागुहाक  
 सकळाउनजासाभा ॥ वदेकलनजा  
 छैसेनराहे ॥ समस्तासबंधारनीजोन  
 र ॥ जयाचेरारासजासातकोरे ॥ रास  
 हातीतांजोहणेनानकोरे ॥ १० ॥ सिंहास  
 निर्वक्रमहाजंयाचा ॥ दिसेतुइयायागुरु  
 राजयाचा ॥ लेउनियांकुंउलठापसारे ॥ ११

॥ ११ ॥ पंच्यासी शत  
 ज्यासी वर्षगनना बापुं दुतामस्तकी ॥ युधी दो  
 एतथापि दुधी रदि सेहु स्त्री जने मस्तकी ॥ पा  
 र्थतुं नमी उतया सी सह सा लोकायेः पाठो पलो  
 युधी दुः सह जा सलो मजर नीया चा खठा ठो  
 पलो ॥ १२ ॥ नमस्कार दुरा नीयां संव्य साची  
 करि बा ए योगें गुरु नान साची ॥ सवग पुढा लो  
 पृथा पुत्र धावे ॥ यदर्थ ॥ जी ज्ञानया ले व धावे ॥  
 आले दुधी र विरर्थ ॥ १३ ॥ नकार्त श्रि ॥  
 क्रोधा जीव विशि ॥ १४ ॥ रवे ज्ञाची सुकार्त  
 श्रि ॥ सो डि पार्थ ॥ १५ ॥ बान समरी बाना  
 सी ने मस्तकी ॥ १६ ॥ विरा पा रये कहि न चुक्तो  
 मारि चने मस्तकी ॥ १७ ॥ सव्याप संव्य हुत  
 साय कता उवाने ॥ कले परा जी तरुणी पर पां  
 उवाने ॥ घा लो श के व क ए सावरी विर घाळा ॥  
 जे सा विजात मृगरा जत सा रि घाळा ॥ १८ ॥  
 आ ह्यो हि नी दे व वि म र्दु नी तु र के ले ॥ १९ ॥

तेशतेसततभुंकीसजेभुकेले ॥ तोपाव  
 वीविजयेकारवमध्यसेना ॥ जेथेपुरंदरप  
 रंतुबळधसेना ॥ १६ ॥ कोणगाकलेआशा  
 ससमारे ॥ रवीळलेविरजयापरिमारे ॥  
 पंखहेपसरतागमतिते ॥ हेधरोनीचनि  
 संगमतिते ॥ १७ ॥ बकेयोतरिसर्वसाक्षीवि  
 ठाकी ॥ मरोपार्थ ॥ नसर्वनलोकी  
 नसमानहोतो ॥ कामा ॥ श्लोक  
 दहाइठयाचारीक ॥ १८ ॥ कोतेयाप्रतीदे  
 वकेयवदकाहिमाग ॥ जाळेफारभूषा  
 र्ययेलकरेजेपिपाशाहो ॥ बोळपार्थ  
 जकासीयासीरचीतोमीवारुणखरणा ॥  
 याविसासहीकारितोंगजजसेसरुइआधा  
 रणी ॥ १९ ॥ तात्काळचापीरचलीचपार्थ ॥ क  
 रुनीयांविरबळअपाते ॥ केलेयुगापा  
 निमुक्तदेवे ॥ सर्वेचीतेघोठकवासुदेव  
 आपुआआश्वगोविंदसा ॥ २० ॥ हिसेवि  
 रंरंरतरिजेरे ॥ २१ ॥ स्वयंयोगीयातो

हयाचाकराने ॥ २१ ॥ ज्याचा करि आर्थ मृतीस्वरारे  
 तो पार्थिवो ज्या सकरीस्वरारे ॥ लिळा मृती  
 ईळगामहती ॥ तोच उंकरे घेतल गामहती  
 ॥ २२ ॥ आत पुष्ट हुय पाजूनि पाणी ॥ तो करी  
 चतुरनी रज पाणी ॥ पाहताति विरको तुक  
 सारे ॥ बोळति प्रबळ पार्थक सारे ॥ २३ ॥  
 कोरवांत सकळा सजयाचा ॥ लक्ष्मते रथ अ  
 साविजयाचा ॥ मे ॥ २४ ॥ धो धो रेंदु  
 आंतरि जरा उघे ॥ २५ ॥ धुरो यान जा ॥ मे  
 मी वाजला उचल ॥ जाळा पाहाती नभा  
 ला सर्व हि शातमे ॥ २६ ॥ उठावले आश्वग जादि  
 माराचा व्यसस्थ पाया ॥ जाळा पाहाती नभा  
 गळा ॥ हातां सज्ज करा पिहिन उतरे काळा  
 चीया हि गळा ॥ २७ ॥ उठावले आश्वग जादि  
 सारे ॥ आंधार तिया चरवे दिसारे ॥ गजे नि  
 यायक चीडा कळाकी ॥ जातो नराच्या चर  
 थावि लोकी ॥ २८ ॥ शारवा मृग श्वज विशा

कश्चमानवाठे ॥ यासीजी उलतरी लाविठ  
 मत्कवाठे ॥ गोडिवमुक्तकारवा जतिहे स  
 नाना ॥ असाधनु धैरकसा स्वमना सोन  
 ना ॥ २५ ॥ राजे मंदे पशै व्यसेध वसी की त्रे  
 गर्त कामये ॥ होना ध्वोग कंठी गपं गये वनः  
 प्रांगजोतिसामंतये ॥ इया ह्यादिक पुपको  
 पुनी बळे स्या कुश्च ॥ २६ ॥ पाले सन्मुख  
 ते नरे विमुख हो ॥ २७ ॥ पशारे ॥ २८ ॥ वा ॥  
 जतो उसीर वाक ॥ २९ ॥ इत क्वांत विरवे  
 दणडा की ॥ ३० ॥ कलुणा ॥ जीका सुठा विध सं  
 धीमा जी च मुया ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ कोउ कावत  
 आसं परतावे ॥ ३३ ॥ आमुच्यात वे मते परतावे  
 गर्जतो विजये दुर्ग मराव ॥ ३४ ॥ कां आशा सीर  
 चकोनी मराव ॥ ३५ ॥ संजोगी लेतु रगसा  
 धरथा सी देवे ॥ ३६ ॥ केले पाहा सुलत पंडु सुते  
 सदेवे ॥ ३७ ॥ देहात पार्थ चळतां स्वरथा वरीतो ॥  
 येक्या करे हये चतुसही सावरीतो ॥ ३८ ॥  
 संजोगी लाह रथ म्या बरा ॥ ३९ ॥ हो उं नको

यावरी घाबरोर स रथी सर्व नीरक्ष से  
 ना ॥ जो मुख्य तो सेंधव ची हि से ना ॥ ३२ ॥  
 होतां असा अनुपदाह व केठ जारी ॥ बोले  
 नरा मन तु संन जया उजारी ॥ आस्ता चला  
 स्वसिद्ध की लत भानु गला ॥ वे ज्या जये इ थ  
 वधास्त वतुं फुकेला ॥ ३३ ॥ हे पावले यशस  
 मस्त मानी ॥ गे ज्या वरी हार वी आस्त मानी  
 आनंद ले कोर वहा सति ले ॥ चला चला सर्व  
 पाहा सति ले ॥ ३४ ॥ की देहे ज सा श  
 वाचा ॥ हा फर्थ म ॥ ठावा चा ॥ पडे  
 ल आग्नि त जे को ॥ रुख नी यो रा द  
 आसे व देहा ॥ ३५ ॥ न को बुध धरी स  
 माया ॥ कळे न पाया ॥ स माया ॥ जा  
 वार्थ हि तो सम जो नी साचा ॥ ये म्या च  
 की ने मत रि हि साचा ॥ ३६ ॥ हिं लल्ल वाक्य  
 पउतां श्रवणी वी ला की ॥ सुर्य कडे मग व दे  
 मुख दे वि ला की ॥ हाउं आतः पर करुं न रा  
 के पं एते ॥ मिंस सय तो ह वी नया स्तव  
 आपणाते ॥ ३७ ॥

(16)

॥ जय इथ विठ वना ॥

काम्यकवनी कामनांति ॥ धर्मराज बंधु सहित ॥ स  
वधो म्यपुरोहित ॥ सारासार जालता ॥ १ ॥ अपाश्रमिद्रोप  
दिनीधान ॥ ठउनिपुरा हितरक्षण ॥ पारधी गेठ पांचहि  
जन ॥ मृगमंश आणा वया ॥ २ ॥ सुधे पिडो नीयां ब्राह्म  
णा ॥ सीघ्रया वया जो जना ॥ बधनी आणा वया मृगग  
ना ॥ वना गेठ प्रतापि ॥ ३ ॥ वराजा जय इथ ॥ कोकी  
कसो मित्रा सहित ॥ ४ ॥ रहो न्यंत ॥ सैन्य आ  
पारतया च ॥ ५ ॥ जा ॥ बाहा काय ॥ चुकउ  
नी आवात या ठायो ॥ ६ ॥ गरी पांउ वजाया ॥ दे  
खुनी पउवा सुतकी ॥ ७ ॥ हे काये शकर मणी  
की बांसाकार सो होम ॥ ८ ॥ चनी पाडे वी सुवनी ॥  
आंगना च न्य आसेना ॥ ९ ॥ म्हणे कोठिका वीचारी  
समार कोणा वी कुमरी ॥ कोणा सप्ताग्याची नारी ॥  
घाणे श्री उठसा ॥ १० ॥ जरि मिळेल ते सी जाज ॥ त  
री पुढे आर्त नाहीं मज ॥ सत्रिया कुकी जन्मोनी का  
ज ॥ सर्व हि म्या साधीले ॥ ११ ॥ कोठिक येउनी आ  
श्रमानी कठि ॥ बंदिती जो उठ्या पाणी पुढि ॥  
म्हणतुंकवणाची गारठि ॥ वण संकठी येककी ॥ १२ ॥

तुझा वृत्तांत पडावया अर्वाली ॥ जोगवां मां  
 जोडोनी पाणी ॥ उदयो करी कुठ स्वामीनी ॥ आनं  
 दा आनंदि ॥ १२ ॥ सूवर्णचंद्र पै चारु कळीके ॥ लाव  
 ण्य मुळ पीठ रेनुके ॥ प्रपंच बांड के गाजवी मुखे ॥ लो  
 ला लागला म्हणे नी ॥ १३ ॥ झोप ही ह्यणे मि झोप दत न  
 या ॥ पांचा पांडवाची जाया ॥ येक ठव नी न पव  
 या ॥ पति समर्थ म्हणे नी ॥ १४ ॥ काठिके संगत  
 हेवार्ता ॥ धैर्य न धरचे जवे इया ॥ आहुत नाव  
 रे कामावस्था ॥ येन जवळीके ॥ १५ ॥ म्ह  
 णे कुशाळ कळ्यान ॥ म्हणे श्री लक्ष्म  
 ण ॥ पुढेति वळदा ॥ कांठ वरी कान  
 नी ॥ १६ ॥ राज्य फर ॥ मर्यादा ये संगती  
 जो गीसी कष्ट ॥ उता या गो सर्व भंड ॥ परम  
 आजागी पांचुही ॥ १७ ॥ मासी जाय होउनी  
 श्रीती ॥ आरुढे कां कन करथी ॥ पांडव पात  
 शिख घाली ॥ पादवी नये मळो का ॥ १८ ॥ झोप  
 ही म्हणे मिथ्या मातु ॥ मितवदकी वेताची वस्तु  
 आभीळा सीता सध्या मृत्यु ॥ पावसी लुपापीष्टा  
 ॥ १९ ॥ आन्याय करुन आहुत ॥ पळसी स

तपपाताकात ॥ तेषु नीकाठि न पवनसुत ॥ आ  
 धेक्षणनलगता ॥ २० ॥ मिनआराजेकोठ्यानकोठि  
 यक्यावानेवधीठकीठि ॥ जेसीतलेहव्यवाठि ॥ म  
 स्महेतिसणधे ॥ २१ ॥ निद्रिस्त ॥ वानीकेशरी ॥ सा  
 वीस्मशुउपउसीकरी ॥ व्याघ्रताउनीकताप्रहरी ॥  
 आज्याककपिपढतोसी ॥ २२ ॥ सर्पपुछरगडोनीचरणी  
 दुस्तकाठिसीमस्तकमणी ॥ तयावाचविअसाजनी  
 काणतोहावीपामरा ॥ २३ ॥ तेवीपीपांउवांचीवनी  
 ता ॥ मृत्यपावसीस्म ॥ जेवीजाकाआळ  
 गीता ॥ पतंगवस्म ॥ जेसंबाळतोपां  
 पोकीते ॥ संधवन ॥ केते ॥ द्रोपदिधर  
 नीकठिनहले ॥ त ॥ रवाठिळी ॥ २४ ॥ व  
 गवाउनीयांरथी ॥ पळपुआतांपवनगती ॥  
 धोम्यहणेरेमेंदमति ॥ मृत्यमोळेघेतळा ॥ २५ ॥  
 आर्धघठकेमाजीजाण ॥ आनर्थपावसीहा  
 रुन ॥ छापीमानजोगोनीछोछन ॥ जन्मा  
 वरिखेडेना ॥ २६ ॥ रथपळेत्वरामोठि ॥ धोम्य  
 धावेपाठोवाठि ॥ तवेआवचीकेहेरेदिक्षी ॥ ध  
 मराजकाननी ॥ २७ ॥ आळुकाझुंकतीसमो  
 री ॥ पिंगळेकरकरतीतरवरि ॥ उळुकासुचकी

तिधुधुकारी॥ ठानी जाली मूणोनी या॥ २०  
 सव्यता सअप सव्यका क॥ आउ वे जा ति हं ह  
 शुक्र॥ मुख पसरोनी जंबूक॥ फीरा फीरा बो  
 जाति॥ ३०॥ धर्म ह ले भीमा की रहि॥ अश  
 मि आनर्थ दिसे दिखी॥ मृगया सांसे नीउ  
 ठाउ ठि॥ चला वहिले स्वाश्रमा॥ ३१॥ वेग पा  
 तले अश्रमा जवकी॥ तव धात्री काले के शोक  
 सुतकी॥ दुहस पिपिणी नकी॥ के रामो कळे  
 पाठि सी॥ ३२॥ व कुंति सुत॥ ते ह  
 लायउनी जयक॥ ही घेउनी पापव  
 त॥ रथ सहित प॥ ३३॥ ह कुंती पोपां  
 चली जण॥ घेत छिर गधमुख बान॥ पुटे  
 पळे संधव करीन॥ पांचहि सीं ह पाठि सी॥  
 ३४॥ यो जमये क आंताले॥ ते हणामाजी  
 आठो पीले॥ गर्जना अ कोनी कापिनले॥  
 सर्व संगी नृपाळ॥ ३५॥ संधव सांगे संगी  
 या प्रति॥ पांउवमारु निराख धाति॥ पां



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com